JuniKhyat(जूनीख्यात) ISSN: 2278-4632
(UGC Care Group I Listed Journal) Vol-14, Issue-12, No.01,December: 2024

सूफ़ी संगीत के परिवेश में मीरा और कबीर : एक विहंगावलोकन

डॉ. वैभव कैथवास, सहायक प्राध्यापक, सुगम संगीत, प्रदर्शन कला विभाग, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह म.प्र.
ईमेल–vaibshruti91@gmail.com,

शोध सारांश–

सूफ़ियाना विचाराधारा की यह एक बहुत बड़ी विशेषता है कि उसका आधार सामंजस्य पर टिका है। निर्गुण निराकार ईश्वर को प्रेम की ताकत में प्राप्त कर लेने की उनकी अभिलाषा सभी धर्मों को उनके प्रति आकृष्ट करती है। संगीत तथा ईश्वरीय आस्था का इतना सुंदर समिश्रण बहुत कम देखने को मिलता है। नाद जब साधना के द्वारा प्राप्त उदात्त एवं सुसंस्कृत हो जाता है तब वह अलौकिक होकर ईश्वर तक अवश्य पहुंच जाता है। सूफ़ियों के संगीत में ऐसा सुरूर था जो कि मतवाला बना देता है।

सूफ़ियों की एक ऐसी परंपरा भी थी जिसमें लोक कथाओं के माध्यम से जन मन तक पहुंचाया जाता था। ऐसी लोक कथाएं प्रायः लौकिक प्रेम पर आधारित होती थी तथा इन प्रणय कथाओं का अंत नायक नायिकाओं के आत्मबलिदान के साथ हो जाता था। दास्ताने लैला मजनूं, हीर रांझा, सोहनी महिवाल और सस्सी पुन्नू आदि लोक कथाओं के माध्यम से ईश्वरीय प्रेम को चित्रित किया गया था। सूफ़ियों के प्रेम–दर्शन का यह एक साकार नमूना है। परमात्मा से मिलने के लिए जीवात्मा की तड़पन तथा शरीर का त्याग किये बिना परमात्मा से न मिल पाने की व्यथा ही इन रचनाओं का परम सत्य है। इसी परिवेश में मीरा एवं कबीर के योगदान व भूमिका को दर्शाया गया है जो पूरे कायनात में शुमार है ।

शब्द कुंजी : जीवात्मा, उच्छवास, विरक्त, विद्यमानता, सोपान, सौहार्द ।

मीरा बाई का जीवनकाल इसी प्रकार सन् 1555 से 1603 ई. तक समझा जाता है और वह भी इसी युग के अंतर्गत ही पड़ता है। मीरा बाई के इष्टदेव गिरिधर नागर नामधारी श्रीकृष्ण चंद्र हैं जो सगुण रूप भगवान माने जाते हैं, जिनकी सुंदर छवि का वर्णन तथा जिनके गुणों के गान में यह सदा लीन रहना पसंद करती थीं।[1] इसी क्रम में कबीर के जन्म का समय 1456 से 1575 तक का मान्य है। कबीर साहिब हिंदी साहित्य के इतिहास में उत्तर भारत की निर्गुण परंपरा के प्रवर्तक. रूप में मान्य है। यद्यपि उनकी भक्ति अपनी पूर्ववर्ती विचारधाराओं से पर्याप्त अंशों में अनुप्रेरित है, तथापि उनके व्यक्तित्व के निरालेपन से उद्‌भूत नवीनता उन्हें सबसे अलग एक महान भक्त के रूप में, एक संत के रूप में, एक समाज विचारक, एक सुधारक के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

संत कबीर की भक्ति भावना में योग साधना और वैष्णव भक्ति का सामंजस्य लक्षित होता है । वस्तुतः कबीर पूर्व युग में भारत में महाराष्ट्र के संतों की भक्ति में तथा उत्तर भारत में रामान्द् की परंपरा में विकसित भक्ति दोनों में योग और ज्ञान के तत्व स्वीकृत हैं। कबीर के विषय में तो यह स्वीकार किया गया है कि वे जिस जुलाहा वंश में पले बढ़े थे वह नाथमतावलंबी लोगों का मुसलमानी रूप था। इसलिए इनकी भक्ति संबंधी मान्यताओं में योग के तत्वों का समावेश स्वाभाविक है।

Copyright @ 2024 Author

योग साधना मूलतः चित्त की एकाग्रता पर बल देती है। कबीर ने भी मन के परिष्कार पर बल दिया है। उनकी भक्ति आराध्य के प्रति निश्चल, निष्काम, प्रेम पूर्ण समर्पण तथा पूर्ण आत्म–परिष्कार पर बल देती है। उन्होंने समस्त बाह्य आचरणों को अस्वीकार कर दिया है। वह भक्ति के लिए साधक में मानसिक दृढ़ता, अनन्यता, आत्मविश्वास और अहंकार का त्याग अवश्य मानते हैं। कबीर की भक्ति मन का क्षणिक उच्छवास ही नहीं है, सुचिन्तित, सुविचारिक, दृढ़ चित्त की स्थाई अवस्था है, इसमें कबीर युग प्रवर्तक का कार्य कर सके हैं। कबीर की भक्ति अपनी पूर्णता में एक सच्चे मानव धर्म का रूप ले लेती है । वह मात्र व्यक्तिगत साधना नहीं है।[2]

आगे मीरा के जीवन काल पर चर्चा करते हैं तो यह मिलता है कि मीराबाई का जन्म सन 1498 ई० में पाली के कुड़की गांव में दूदा जी के चौथे पुत्र रतन सिंह के घर हुआ। ये बचपन से ही कृ ष्णभक्ति में रुचि लेने लगी थीं। मीरा का विवाह मेवाड़ के सिसोदिया राज परिवार में हुआ। चित्तौड़गढ़ के महाराजा भोजराज इनके पति थे जो मेवाड़ के महाराणा सांगा के पुत्र थे। उनके पति 1518 में दिल्ली सल्तनत के साथ चल रहे युद्धों में से एक में घायल हो गए थे, और 1521 में युद्ध के घावों से उनकी मृत्यु हो गई। खानवा के युद्ध में बाबर पहले मुगल सम्राट के खिलाफ उनकी हार के कुछ दिनों बाद उनके पिता और ससुर (राणा सांगा) दोनों की मृत्यु हो गई। पति की मृत्यु के बाद उन्हें पति के साथ सती करने का प्रयास किया गया, किन्तु मीरा इसके लिए तैयार नहीं हुईं। मीरा के पति का अंतिम संस्कार चित्तोड़ में मीरा की अनुपस्थिति में हुआ। पति की मृत्यु पर भी मीरा माता ने अपना श्रृंगार नहीं उतारा, क्योंकि वह गिरधर को अपना पति मानती थी।

वे विरक्त हो गईं और साधु–संतों की संगति में हरिकीर्तन करते हुए अपना समय व्यतीत करने लगीं। पति के परलोकवास के बाद इनकी भक्ति दिन–प्रतिदिन बढ़ती गई। ये मंदिरों में जाकर वहाँ मौजूद कृष्णभक्तों के सामने कृष्णजी की मूर्ति के आगे नाचती रहती थीं। मीराबाई का कृ ष्णभक्ति में नाचना और गाना राज परिवार को अच्छा नहीं लगा। राणा सांगा की मृत्यु के बाद विक्रम सिंह मेवाड़ के शासक बने। एक लोकप्रिय किंवदंती के अनुसार, उसके ससुराल वालों ने कई बार उसकी हत्या करने की कोशिश कीय प्रयासों में मीरा को विष का गिलास भेजना और उसे यह बताना कि यह अमृत था, और उसे आभूषणों की जगह साँप की टोकरी भेजना शामिल था। किसी भी मामले में उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया गया, साँप चमत्कारिक रूप से सोने का आभूषण बन गया और विष ने मीरा बाई पर कोई असर नहीं किया। एक अन्य किंवदंती के अनुसार विक्रम सिंह ने उसे खुद को डूबने के लिए कहाय जब वह ऐसा करने का प्रयास करती है, तो वह पानी पर तैरती रहती है।घर वालों के इस प्रकार के व्यवहार से परेशान होकर वह द्वारका और वृन्दावन गई।

वह जहाँ जाती थी, वहाँ लोगों का सम्मान मिलता था। लोग उन्हें देवी के जैसा प्यार और सम्मान देते थे। मीरा का समय बहुत बड़ी राजनैतिक उथल–पुथल का समय रहा है। बाबर का हिंदुस्तान पर हमला और प्रसिद्ध खानवा का युद्ध उसी समय हुआ था। इन सभी परिस्थितियों के बीच मीरा का रहस्यवाद और सूफी भक्ति की परम्परा में मिश्रित सगुण पद्धति सर्वमान्य बनी।[3] इसी क्रम में मीरा का सूफ़ी मत के प्रति समर्पण की भावना का एक रूप देखेंगे जो इस प्रकार विदित है–

Copyright @ 2024 Author

मीरा और सूफी मत :– सूफ़ी मत यद्यपि बाहर से आया था, पर सूफियों की भावनाऐं, प्रेम शीलता और उदारता थी । यही कारण है कि भारतीय चिंतन और भावधारा के साथ इसका तादात्मय हो गया। मीरा ने सूफ़ियों की विचारधारा ग्रहण की या नहीं, उनसे प्रेरणा ली या नहीं यह विवादास्पद विषय है, परंतु मीरा और सूफ़ियों के108 सूफ़ी संगीत : राग परंपरा के संदर्भ में जीवन दर्शन में कुछ साम्य अवश्य दृष्टिगत होते हैं जैसे प्रेम, विरह और सौन्दर्य जो सूफ़ियों की प्रेम साधना के अंग हैं। वे हमे मीरा में भी मिलते है। वास्तव में सूफ़ियों में जो सरस साधना पाई जाती थी वह अपने में भक्ति आंदोलन से प्रभावित थी, यद्यपि वह सूफ़ियों की अपनी अनुभूति तो थी ही। मीरा की साधना भी प्रेम ही है। वह भी प्रेम वेदना में व्याकुल है, प्रेम के दर्द को लिए हुए बन बन डोलती है।[4]

सूफ़ियों के प्रेम की पीर मीरा की विरह व्यथा से मिलती जुलती है। फिर भी मीरा की प्रेम साधना और सूफ़ियों की प्रेम साधना में अंतर है। मीरा के ईष्ट देव साकार गिरधर थे, सूफ़ियों का प्रेम निर्गुण के प्रति था। सूफियों का प्रेम काल्पनिक और दर्शन पर आधारित था। उसका माध्यम भौतिक था जबकि मीरा का प्रेम अनुभूति परक था । प्रेम और सौन्दर्य का चिरसंबंध है। इब्नुल अरबी के अनुसार श्प्रेम का मूल कारण ही प्रेम सौन्दर्य है, मीरा भी मोहन के रूप पर लुभानी थी। सुन्दर वदन, कमल लोचन, बांकी चितवन छवि उनके नैनों में समा गई थी। प्रेमी का यह प्रेम व्यर्थ नहीं जाता। हाफिज ने कहा है कि 'क्या कोई ऐसा प्रेमी हुआ है जिसके हाल पर यार ने दया दृ ष्टि न की हो। 'मीरा का विकल प्रणय सुनते ही श्याम उनके भवन में पधारते हैं। और मीरा आनंद मनाती है। इस प्रकार सूफ़ियों की प्रेम भावना से सामान्य सादृश्य होने पर भी सूफ़ी भाव मीरा में भी दिखाई देता है ।[5]

मीरा का संगीतात्मक काव्य :– मीरा में संगीत तो परंपरागत है, पर वह साध्य न होकर अभिव्यक्ति का साधन है उसमें राग का ही नहीं बल्कि छंदों का भी निर्वाह है। उसकी एक बड़ी विशेषता यह है कि वह शास्त्र से अक्रांत न होते हुए भी शास्त्र सम्मत है और उसकी योजना भावों के अनुरूप है। उनके पदों शब्दार्थ की साधना संगीत के स्वरों के साथ एकरस हो गई है। उनका संगीत भाव को अनुकूल परिवेश प्रदान करता है।[6]

मीरा का प्रत्येक पद किसी न किसी राग से संबंधित है। वे न तो संगीत शास्त्र से बंधी थीं और न ही शास्त्र भाषी थीं, पर वे तो शास्त्र सिद्ध थीं। उन्होंने तो जितनी भी गीतियां रचीं हैं वह अत्यंत स्वच्छ, उन्मुक्त, स्वाभाविक तथा सहज आत्मनुभूति परक है। इससे यह पता चलता है कि वह शास्त्रक्रान्त नहीं थीं परंतु उन्हें संगीत की पूरी जानकारी थी। यही कारण है कि उनके पदों में रागों का आश्चर्यजनक प्रवाह देखने को मिलता है।[7]

मीरा के पदों में हमीर, भीमपलासी, सारंग, बिहाग, कलिंगड़ा, काफी, जौनपुरी, गुर्जरी, त्रिवेणी, कामोद, देस, दरबारी, भैरवी, मुल्तानी, मालकौंस, झिंझोटी, पटमंजरी, गुणकली, धानी, पीलू, बरवा, परज, बिलावल, खंबात और पहाड़ी इत्यादि अनेक राग उपलब्ध होते हैं। यहां तक कि एक राग का नाम तो मीरा के नाम पर भी है, जिसको की कालांतर में 'मीरा की मल्हार' के नाम से जाना जाता है। उनके भजनों में लगभग 70 राग मिलते हैं। जिनमें स्वयं मीरा को राग पीलू अत्याधिक प्रिय था। उनके रागों में भी रस व्याप्त है। उनके पद साधारण ग्राम बंधुओं से लेकर बड़े बड़े

 Copyright @ 2024 Author

संगीतज्ञों द्वारा गाये जाते हैं। जो कि उनकी सफल गेयता का प्रमाण है, इन सब बातों को देखते हुए यह पूरी निश्चिंतता के साथ कहा जा सकता है कि मीरा के पदों में पूर्ण रूप से संगीतात्मकता व्याप्त है।[8]

इसी प्रकार **कबीर** के सांगीतिक विचारधारा के रूपांतरण को देखते हैं जो सूफ़ीवाद व निर्गुण विचारधारा में विशेष स्थान रखता है– संगीत शास्त्र के अनुसार गीतों की रचना कतिपय नियमों तथा औपचारिकताओं के अभाव में नहीं हो सकती है, कबीर ने अधिक प्रयास भावाभिव्यकति के लिए किया है। जहां तक संत कबीर की रचनाओं में संगीत की विद्यमानता का प्रश्न है तो यह कहना उचित होगा कि आज भी अनेक शास्त्रीय गायक, संत कबीर के भजनों का गायन श्रद्धा पूर्वक करते हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैं :– कुमार गंधर्व, पं. भीमसेन जोशी, पं. जसराज, कलापिनी कोमकली, शुभा मुद्गल, सी. आर. व्यास इत्यादि गायकों ने उनकी रचनाओं का गायन किया है। सिक्खों के आदिग्रंथ में भी संत कबीर के 125 से 250 साखियां संग्रहित की गई हैं। जिसे पुराने हस्तलेखों के आधार पर तैयार किया हुआ बताया जाता है। सूफ़ियाना क़व्वालियों में भी कबीर साहब की रचनाओं को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि इस महान संत कवि की रचनाओं का रहस्यवादी निर्गुण भक्तिधारा के प्रचार के साथ साथ संगीत के आध्यात्मिक रूप प्रदान करने में बहुत योगदान रहा है। जैसे : कौन बताए बात गुरु बिन। उपर्युक्त पद राग हमीर में रचित है और यह रचना अत्यंत प्रसिद्ध रचना है।

कबीर साहब की अपनी रचनाओं में 17 रागों का प्रयोग किया गया है, जिनके नाम इस प्रकार हैं। श्री, गौड़ी, आसा, गूजरी, सोरठ, धनासिरी, तिलंग, बिलावल, गौड़, रामकली, सूहा, मारू, केदारा, भैरव, बसंत, सारंग और प्रभाती। कबीर साहब प्रायः सत्संगों में ही मगन रहा करते थे और उनका प्रवचन सुनने के लिए लोग दूर – दूर से आया करते थे। कर्मकांड तथा बाह्य आडंबर की कटु आलोचना से अनेक मुल्ला मौलवी और ब्राह्मण समाज उनके विरोधी हो गये थे किंतु कबीर साहब ने कभी भी उनकी परवाहनहीं की वे निशंक भाव से प्रेम और सादगी के साथ आध्यात्मिकता का प्रचार करते रहे । उनका यह दोहा अत्यंत मार्मिक तथा सटीक है–

दुनिया हो गई बावरी, पाथर पूजन जाए
घर की चक्की न पूजै, जिसका पिसा खाए

उनकी ऐसी ही अनेक रचनाओं द्वारा हमें लोकाचार, पारस्परिक, प्रेम – सौहार्द, भाईचारे और आध्यात्मवाद की शिक्षा देते हुए प्राप्त हुए हैं। कबीर दास जी का जीवन पूर्ण रूप से सामाजिक और धार्मिक परिवेश के कट्टरपंथियों को बदलते हुए बीता।[9]

संगीत साधना की दृष्टि से मीरा बाई को सर्वश्रेष्ठ कहा जा सकता है। उन्होंने किसी भी जात पात एवं ऊंच नीच के भेदभाव से रहित मानव कल्याण के लिए काव्य संगीत की रचना की। उनके पद कोरी कविता अथवा काव्य रचना नहीं है, अपितु उन्हें श्रेष्ठ गीति–गेय काव्य की संज्ञा से अभिग्रहित किया जा सकता है। उसमें शास्त्रीय संगीत के भिन्न भिन्न तत्व और स्वरों का समन्वय तथा सामंजस्य मिलता है। उनके पद कीर्तनीय भाव से ओत–प्रोत हैं, जो ईश्वर के निकट पहुंचने के लिए एक मात्र सोपान, सीढ़ी का कार्य करते हैं। मीरा जानती थी कि ईश्वर न तो योग

Copyright @ 2024 Author

में मिलेगा न ही तप और जप में, वैराग्य में अपितु जहां संगीत के माध्यम से उसके गुणों का मनोहारी गान होगा वहीं ईश्वर निवास करेंगे। इसके लिए शास्त्रों पर दृष्टिपात करने से एक श्लोक प्राप्त होता है, जोकि इस प्रकार है :–

नाहमवसामि वैकुण्ठे.....मम् भक्ता यत्र गायन्ति ।

उन्होंने अपने भक्तिभाव को संगीत की पीठिका में बैठाया क्योंकि ईश्वर को प्राप्त करने का सुगम व सत्य मार्ग था। उन्होंने अपने दर्द को, अपने प्रेमोन्माद को सांगीतिक स्वरों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। यही कारण है कि उनके पद, उनके आंसुओं द्वारा आज भी गीले प्रतीत होते हैं और उनमें आज भी संगीत की अजस्र धारा प्रवाहित हो रही है। उनकी कसक भरी पदावलियों को देखकर महादेवी वर्मा ने ठीक ही कहा है कि यह सारे पद, गीति जगत की अद्‌भुत सामग्री है।[10]

निष्कर्ष– इस सांगीतिक रुपरेखा में मीरा एवं कबीर का काव्य के साथ– साथ संगीत की भूमिका अप्रतिम रही अतः मध्यकाल 'स्वर्णिम संगीतश में जहां अनेक संगीतज्ञ संगीत के शास्त्रीय स्वरूप की उन्नति में योगदान दे रहे थे, वहीं मीरा बाई और कबीर सूफी में पुष्पित भक्ति संगीत को प्रोत्साहन दे रहे थे। अतः मीरा का व्यक्तित्व एक कवियत्री की अपेक्षा भक्त गायिका के रूप में – अधिक प्रभावी बन पड़ा। उनके पद काव्य गीतों के तत्व से परिपूर्ण हैं। उनमें जो भाव निहित है और जो ज्ञान गंगा उनमें प्रवाहित हो रही है, उसके सर्वव्यापी स्वरों से ओतप्रोत है। काव्यगीति की इस महान गायिका के महान पदों को देखकर महाकवि निराला जी ने उचित ही कहा था कि श्मीरा संगीत की एक देवी थीं। कबीर भी एक कवि के साथ– साथ संगीत के भी प्रकांड विद्वान सिद्ध हुए जिन्होंने रागदारी विषयक भूमिका को बारीकियों से आंकलन किया जो संसार में सर्वव्याप्त है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. त्रिपाठी, मंजू, उत्तरी भारत की संत परंपरा, पृष्ठ–83
2. सचदेव, रेनू, कबीर एवं उनके समसामयिक निर्गुण संतों की भक्ति पद्धति, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली 1999, पृष्ठ–124.
3. https://hi.wikipedia.org
4. भार्गव, रमा, भक्ति काव्य की परंपरा में मीरा, जोधपुर : कुसुमाञ्जलि पब्लिशिंग , 1991, पृष्ठ–145
5. भार्गव, रमा, भक्ति काव्य की परंपरा में मीरा, जोधपुर : कुसुमाञ्जलि पब्लिशिंग , 1991, पृष्ठ–146
6. भार्गव, रमा, भक्ति काव्य की परंपरा में मीरा, जोधपुर : कुसुमाञ्जलि पब्लिशिंग , 1991,पृष्ठ–83
7. भार्गव, रमा, भक्ति काव्य की परंपरा में मीरा, जोधपुर : कुसुमाञ्जलि पब्लिशिंग , 1991, पृष्ठ–84
8. भार्गव, रमा, भक्ति काव्य की परंपरा में मीरा, जोधपुर : कुसुमाञ्जलि पब्लिशिंग , 1991, पृष्ठ–44
9. सचदेव, रेनू, धार्मिक परम्पराएँ एवं हिंदुस्तानी संगीत, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली 1999, पृष्ठ–131
10. सचदेव, रेनू, धार्मिक परम्पराएँ एवं हिंदुस्तानी संगीत, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली 1999, पृष्ठ–125

 Copyright @ 2024 Author